जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

20 नवम्बर, 2024

प्रेस विज्ञप्ति

'लापता लेडीज़': सरोजिनी नायडू महिला अध्ययन केंद्र - जामिया मिल्लिया इस्लामिया ने भारत के ऑस्कर दावेदार के लैंगिकता संबंधी आलोचनात्मक विश्लेषण की मेजबानी की।

जामिया मिल्लिया इस्लामिया में सरोजिनी नायडू महिला अध्ययन केंद्र ने ऑनलाइन फिल्म चर्चा का आयोजन किया जिसमें प्रसिद्ध फिल्म निर्माता किरण राव द्वारा निर्देशित और समीक्षकों द्वारा प्रशंसित भारतीय फिल्म और भारत की ऑस्कर प्रविष्टि 'लापता लेडीज' का लैंगिकता के महत्वपूर्ण दृष्टिकोण से विश्लेषण किया गया। इस कार्यक्रम ने फिल्म में समकालीन भारत में महिला एजेंसी और उसकी पहचान के चित्रण की जांच करने के लिए विद्वानों और छात्रों को एक साझा मंच प्रदान किया ।

जामिया के अंग्रेजी विभाग की कवयित्री, लेखिका और अनुवादक, डॉ. सबा बशीर संसाधन व्यक्ति रहीं जबकि सरोजिनी नायडू महिला अध्ययन केंद्र की मानद निदेशक और राजनीति विज्ञान विभाग की अध्यक्ष प्रो बुलबुल धर जेम्स ने सत्र की अध्यक्षता की। सरोजिनी नायडू महिला अध्ययन केंद्र के डॉ. अदफर शाह ने कार्यक्रम का समन्वय किया जिसका समर्थन छात्र स्वयंसेवक शुभांगी, जोयबा और वैभव ने किया।

2001 के ग्रामीण भारत की पृष्ठभूमि पर बनाई गई यह फिल्म दो दुल्हनों की कहानी के बारे में है जो ट्रेन में सफर के दौरान गलती से अपनी जगह बदल लेती हैं। यह फिल्म महिलाओं की पहचान, स्वायत्तता और पितृसत्तात्मक ढांचे में प्रतिरोध के बारे में गहरी कहानियों को उजागर करती है। जो बात सतह पर एक गलतफहमियों की हास्यप्रद कहानी लगती है वह पहचान इस बात की सूक्ष्म खोज में बदल जाती है कि महिलाएं किस प्रकार सामाजिक बाधाओं का सामना करती हैं, उनका प्रतिरोध करती हैं और कभी-कभी उन्हें तोड़ती हैं।

चर्चा भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में लैंगिक गतिशीलता और सामाजिक रूढ़ियों के बारे में फिल्म के व्यवहार पर केंद्रित थी। डॉ. सबा बशीर ने सभी पहलुओं को स्पष्ट रूप से पेश किया । फिल्म में लैंगिकता से लेकर सामाजिक संरचना और भाषा के पहलुओं को शामिल किया गया है। ऑस्कर के लिए चुनी गई फिल्म के बारे में उन्होंने यह कहा कि , *"लापता लेडीज' के बारे में खास बात यह है कि यह किस प्रकार विशिष्ट सांस्कृतिक संदर्भों को पहचान, स्वतंत्रता और आत्म-खोज के सार्वभौमिक विषयों में बदल देती है। यह गंदे कपड़े धोने के बारे में नहीं है; यह उन कहानियों के साथ विश्व सिनेमा में योगदान करने के बारे में है जो प्रामाणिक रूप से भारतीय हैं, फिर भी सार्वभौमिक रूप से मानवीय हैं।"* वक्ता ने यह भी कहा कि, "*यहाँ असली उत्सव हमारे सिनेमा के विकास का है - कलात्मक रूप से सम्मोहक होने के साथ-साथ आलोचनात्मक रूप से जागरूक होने की इसकी क्षमता, वैश्विक रूप से प्रासंगिक होने के साथ-साथ स्थानीय रूप से निहित होने की इसकी क्षमता है "।*

प्रो बुलबुल धर जेम्स ने अपने उदघाटन भाषण में प्रासंगिकता के बारे में सिनेमाई कामों की आलोचना करते हुए तर्क दिया कि *"इस प्रकार के आख्यानों की अंतरराष्ट्रीय मान्यता हमारी शर्म को नहीं बल्कि एक समाज के रूप में कला के माध्यम से अपनी चुनौतियों का सामना करने के हमारे साहस को दर्शाती है। यह हमारी सांस्कृतिक गरिमा को बनाए रखते हुए आत्म-चिंतन में संलग्न होने की हमारी क्षमता का प्रमाण है। जब हम अपनी कहानियाँ ईमानदारी और कलात्मक निष्ठा के साथ बताते हैं, हम मान्यता नहीं चाहते बल्कि मानवीय अनुभवों के बारे में वैश्विक संवाद में भाग ले रहे हैं।"*

फिल्म चर्चा में 'लापता लेडीज़' को भारतीय समाज के आईने के रूप में परखा गया, जहाँ गलत पहचान की प्रतीत होने वाली सरल कहानी समकालीन भारत में महिलाओं की आवाज़, पसंद और दृश्यता के बारे में गहन बातचीत के द्वार को खोलता है। गंभीर सामाजिक मुद्दों के कलात्मक व्यवहार ने शिक्षाविदों और दर्शकों के बीच सार्थक संवाद को जन्म दिया। यह कार्यक्रम महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों पर बातचीत को आगे बढ़ाने में मीडिया की भूमिका और लैंगिक दृष्टिकोण से इन आख्यानों का विश्लेषण करने में अकादमिक केन्द्रों के महत्व का प्रमाण था। ऑनलाइन प्रारूप ने व्यापक भागीदारी को सक्षम किया जिससे विशेषज्ञ और प्रतिभागियों के बीच लैंगिकता, मीडिया और सांस्कृतिक आख्यानों का प्रतिच्छेदन के बारे में समावेशी संवाद को बढ़ावा मिला। । प्रतिभागियों द्वारा की गई चर्चा ने लैंगिकता संबंधित मुद्दों के फिल्म के चित्रण का आलोचनात्मक विश्लेषण किया और वह भी खास तौर से भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में। यह फिल्म जो लैंगिक गतिशीलता और सामाजिक रूढ़ियों पर गहराई से चर्चा करती है वहीं यह पितृसत्ता, पहचान और महिलाओं की एजेंसी के व्यापक विषयों की खोज के लिए एक आकर्षक माध्यम के रूप में कार्य करती है । सत्र ने मीडिया और संस्कृति में लैंगिक समानता और प्रतिनिधित्व के बारे में बातचीत को बढ़ावा देने के लिए विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता को दर्शाया। आकर्षक प्रारूप, विशेषज्ञ अंतर्दृष्टि और अंतःविषय फोकस ने इसे छात्रों, शिक्षाविदों और व्यापक दर्शकों के लिए एक मूल्यवान अधिगम का अवसर बना दिया ।

डॉ. अदफर शाह, पीआर- सरोजिनी नायडू महिला अध्ययन केंद्र और फिल्म चर्चा के समन्वयक ने विषय का परिचय दिया और यह तर्क दिया कि, "लापता लेडीज़ पारंपरिक कथाओं को कुशलतापूर्वक पलटती है, सूक्ष्म हास्य के माध्यम से महिलाओं की एजेंसी को प्रदर्शित करती है, लैंगिकता को वर्ग एवं क्षेत्रीय पहचान के साथ जोड़ती है, और ग्रामीण महिलाओं की प्रतिरोध रणनीतियों को उजागर करती है और अंततः सामाजिक मानदंडों की एक शक्तिशाली आलोचना प्रस्तुत करती है ।" डॉ. अदफर शाह और छात्र समन्वयक ज़ोयबा औपचारिक धन्यवाद ज्ञापित किया ।

जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया